अनुक्रमणिका

1	प्राचीन इतिहास का निर्माण	2
2	हड़प्पा / सिंधु घाटी सभ्यता	7
3	वैदिक कालीन इतिहास	12
4	संगम युग: दक्षिण भारत का इतिहास	21
5	मौर्य कालीन इतिहास	25
6	बौद्ध धर्म और जैन धर्म	40
7	उत्तर मौर्य युग (*200 BC - 300 BC)*	55
8	गुप्त कालीन इतिहास [*300 CE- 600 CE]*	62
9	हर्षवर्धन और दक्षिणवर्ती शासक	69

1. प्राचीन इतिहास का निर्माण

ऐतिहासिक स्रोत - निम्नलिखित मूल स्रोत हैं जिनसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारीयां प्राप्त होती हैं/ इतिहास का निर्माण इन्हीं स्रोतों पर आधारित है।

स्रोत	साक्ष्य	जानकारी
भौतिक अवशेष:	**रेडियो कार्बन डेटिंग-** किसी वस्तु की आयु निर्धारित करने की एक विधि है। **दक्षिण भारत के पत्थर द्वारा निर्मित भव्य मंदिर**; पूर्वी भारत के **ईट द्वारा निर्मित मठ**; टीले की ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज खुदाई, महापाषाण/मेगालिथ *(दक्षिण भारत)*	• जीवन शैली की लगभग सभी पहलुवों से जैसे, **मिट्टी के बर्तनों का उपयोग**, **गृह-निर्माण योजना, कृषि *(उत्पादित अन्न)*, पालतू जानवरों, उपकरणों के प्रकार, हथियार** आदि और समय तथा भौगोलिक अवस्थिति के अनुरूप **शवाधान की प्रथाओं से, जानकारी मिलती हैं।** • **ऊर्ध्वाधर खुदाई** → विभिन्न भौतिक संस्कृति के कालानुक्रमिक विकास का पता चलता है। • **क्षैतिज खुदाई** → किसी विशेष संस्कृति के संदर्भ में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध कराता है।
सिक्के :	सिक्कों के अध्ययन को **मुद्राशास्त्र (*numismatics)*** कहा जाता है। खुदाई से एकत्र किए गए सिक्के देश और देश के बाहर विभिन्न संग्रहालयों में सूचीबद्ध कर रखा गया हैं।	• प्रारंभिक सिक्कों में अधिक प्रतिकों का प्रयोग नहीं किया जाता था। राजाओं या जारीकर्ता के नाम *(गिल्ड/व्यापारी)*, देवताओं या तिथियों का उल्लेख बाद के सिक्कों में किया जाने लगा था। ये सिक्के कालानुक्रम के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और आर्थिक इतिहास के निर्माण में सहायक हैं। • **स्थानीय और सीमा पार लेन-देन में** इन सिक्कों का प्रयोग हमें विभिन्न शासक राजवंशों और उनके शासन की सीमा के बारे में जानकारी प्रदान करते है। **सिक्कों में प्रयुक्त धातु और सिक्कों की संख्या एक राज्य में व्यापार, वाणिज्य और वित्त की स्थिति की ओर इंगित करती है।** • उत्तर गुप्त कालीन कुछ सिक्के उस अवधि में व्यापार और वाणिज्य में गिरावट की ओर इंगित करते हैं।
	पुरालेखशास्त्र(*Epigraphy)* अभिलेखों का अध्ययन है। पुरालिपिशास्त्र (पेलियोग्राफी): शिलालेख और अन्य अभिलेखों पर प्राचीन लेखों का अध्ययन है।	• चित्रमय हड़प्पा अभिलेखों का अभी तक क्षय नहीं हुआ है। • **दक्षिण भारत -** मंदिर की दीवारों पर अभिलेख। • अभिलेखों से सामान्य जन, अधिकारी, सामाजिक, धार्मिक और प्रशासन *(जैसे, अशोक के शिलालेख)* के

अभिलेख	मुहरों, प्रस्तर स्तंभों, चट्टानों, तांबे की पत्रों, मंदिर की दीवारों और ईंटों या चित्रों पर उत्कीर्ण अभिलेख। सर्वप्रथम इन्हें प्राकृत *(300* ईसा पूर्व*)* भाषा में लिखा जाता था, तत्पश्चात संस्कृत में और इसके बाद क्षेत्रीय भाषाओं में लिखा जाने लगा।	बारे में जानकारी मिलती है, साथ ही शाही आदेश के बारे में भी पता चलता है। • **अशोक के अभिलेख***:* ब्राह्मी, खरोष्ठी, ग्रीक और अरमाइक लिपियों का प्रयोग किया गया था। • दान, भूमि अनुदान और राजाओं तथा विजेताओं *(*समुद्रगुप्त और पुलकेशिन द्वितीय आदि*)* की उपलब्धियों का वर्णन।
साहित्यिक स्रोत*:*	चार वेद, रामायण और महाभारत, स्मृतियाँ और धर्म सूत्र, महाकाव्य, जैन और बौद्ध ग्रंथ, साहित्य, संगम साहित्य, नाटक आदि।	• हमें प्राचीन काल की सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्थितियों के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। • भारत में सबसे प्राचीन पांडुलिपियां बर्च की छाल और ताड़ के पत्तों पर लिखी गई थीं। • **कौटिल्य का** 'अर्थशास्त्र' एक राजा और उसकी अर्थव्यवस्था, राजनीति, प्रशासन और समाज का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत करता है। • पुराण, गुप्त शासन तक का राजवंशीय इतिहास प्रदान करते हैं। • ये स्रोत भाषा, लिपि और लेखन की शैली के उपयोग के संदर्भ में भी जानकारी प्रदान करते हैं।
विदेशी विवरण	यूनानी, रोमन या चीनी आधिकारिक इतिहासकार या राजनयिक तथा तीर्थ यात्रिय या नाविक/ खोजकर्ता आदि के विवरण।	• **सिकंदर के आक्रमण की जानकारी** पूरी तरह से ग्रीक स्रोतों पर आधारित है। • **मेगस्थनीज की "इंडिका"** मौर्य काल के बारे में जानकारी प्रदान करता है। • भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार असंतुलन का **वर्णन** प्लिनी के **"नेचुरल हिस्टोरिका** " से प्राप्त होता है। • इन यात्रियों का उस समय के राजाओं ने स्वागत किया और उन्होंने लगभग हर उस पहलू के बारे में लिखा जो उन्होंने वहाँ देखा था, जैसे वास्तुकला, सामाजिक विभाजन, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएं आदि।

प्रागैतिहासिक काल

- यह मानव इतिहास में *200000* ईसा पूर्व से *3500/2500* ईसा पूर्व के मध्य की अवधि है जब पहली सभ्यता अस्तित्व में आई थी।
- इसे *5* कालखंडों में विभाजित किया जाता हैं - पुरापाषाण, मध्य पाषाण, नवपाषाण, ताम्रपाषाण और लौह युग।

प्रस्तर युग (पाषाण काल *):*

- प्रारंभिक भारतीय इतिहास पाषाण युग की संस्कृतियों से शुरू होता है जिसमें मानव प्रजातियों ने अपने अस्तित्व के लिए पत्थर *(ग्रीक में लिथोस')* का प्रयोग किया था।
- पाषाण युग को मोटे तौर पर तीन कालखंडों में विभाजित किया जाता है- पुरापाषाण काल *(20* लाख ईसा पूर्व - *10,000* ईसा पूर्व*)* → मध्य पाषाण काल → नवपाषाण काल → ताम्रपाषाण *(4000* ईसा पूर्व - *1500* ईसा पूर्व*)*।

1 (a): निम्न पुरापाषाण काल [700,000 ईसा पूर्व - 100,000 ईसा पूर्व] (होमोइरेक्टस)	
क्रमागत विकास	• इस काल में मनुष्य मांस पकाना और जानवरों को भगाने के लिए आग पर नियंत्रण करना सीखा। • इस काल के लोग शिकार और खाद्य संग्राहक थे तथा वृक्षों के नीचे और गुफाओं में निवास करते थे।
उपकरण	• अपरिष्कृत और खुरदरे उपकरण जैसे चॉपर, कुल्हाड़ी , पेबुल्स आदि ।
उदाहरण *(उपकरण)*	• **हस्त-कुठार** और विदारनी
स्थल	• बोरी, डीडवाना, भीमबेटका, अतिरम्पक्कम, नागार्जुनकोंडा आदि।

1 (b): मध्य पुरापाषाण युग [100,000 BC - 40,000 BC] (नियंडरथल)	
क्रमागत विकास	• **इस काल में भाषा** का आविष्कार हुआ + मानव शिकारी और खाद्य संग्राहक ही बना रहा।
उपकरण	• फ्लिंट जैसे सख्त पत्थर से निर्मित हल्के उपकरण का प्रयोग।
उदाहरण *(उपकरण)*	• शल्क(*flakes)*से बने उपकरणों का प्रयोग जैसे- ब्लेड, स्क्रैपर और बोरर्स आदि।
स्थल	• नेवासा, भीमबेटका, डीडवाना, उत्तर प्रदेश में बेलन घाटी आदि।

1 (c): उत्तर पुरापाषाण युग [40,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व] (होमो सेपियंस)	
क्रमागत विकास	• **अन्य** होमिनिन प्रजातियां इस समय तक विलुप्त हो गए थे।
उपकरण	• अधिक परिष्कृत और हल्के उपकरण का प्रयोग। इन उपकरणों के दोनों किनारें धारदार होते थे।
उदाहरण *(उपकरण)*	• **ब्लेड, स्क्रैपर, और ब्यूरिन को** हत्थे में लगाया जाता था| सुई, हार्पून आदि जैसे हड्डी से निर्मित औजार।